Raja Mansingh Tomar Music & Arts University, Gwalior (M.P.

CHOICE BASED CREDIT SYSTEM (CBCS)

Yearly Grading Scheme

B.P.A. III YEAR PRIVATE

Subject cod	Subject Nature	End Term	Total Mark %	Minimum Passing Mark %
Group-A	***Core Subject – Kathak***			
C1-101	History & development of Indian dance	100	100	33%
C1-102	Essay composition, rhythmic pattern and principles of practical	100	100	33%
C1-103	Practical one (with nss camp)	100	100	33%
Group-B	Elective open-1 LITERATURE any one following for teaching availability (HINDI/ENGLISH/SANSKRIT)			
E1-101	THEORY-1	100	100	33%
E1-102	THEORY-2	100	100	33%
	Elective open-2- SOCIAL SCIENCE			
	any one following for teaching availability (HISTORY/PHILOSOPHY)			
E2-101	THEORY-I	100	100	33%
E2-102	THEORY-II	100	100	33%
Group- C	***FOUNDATION COURSE (Compulsory)***			
F-HM-101	HINDI & MORAL VALUES - I	100	35	33%
F-HM-102	ENGLISH LANGUAGE – II	100	35	33%
F-HM-103	BASICS OF COMPUTER – III	100	30	33%

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

स्नातक कक्षाओं के लिये वार्षिक पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम(स्वाध्यायी)

Choice Based Credit System- (CBCS)

सत्र 2021–22

Class : BPA III_{rd} Year
Subject : Kathak Dance
Paper : I^{st}
Title of paper : भारतीय नृत्य का इतिहास, विकास एवं प्रयोगात्मक सिद्धांत (History and development of Indian dance)

Compulsory/Optical : Compulsory
Max. Marks : 100

Particulars/विवरण		
Unit- 1_{st}	1. कथक मृत्य का इतिहास एवं विकास क्रम 2. ताण्डव एवं लास्य नृत्य का सविस्तार वर्णन।	
Unit- II^{nd}	1. कथक नृत्य के जयपुर घराने की शैलीगत विशेषताएं तथा घराने की परम्परा का अध्ययन। जीवनीयाँ एवं कथक नृत्य में योगदान– पं. सुन्दरप्रसाद, पं.– नारायण प्रसाद, पं. कुंदन लाल गंगानी। 2. पाश्चात्य नृत्य शैली को समझाइए।	
Unit- III^{rd}	1. आचार्यभरतमुनि रचित नाट्यशास्त्र के अनुसार भृकुटी भेदों का अध्ययन। 2. आचार्य नन्दिकेश्वर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' के अनुसार असंयुक्त हस्तमुंद्राओं (16 से 23 तक) श्लोक सहित ज्ञान।	
Unit- IV^{th}	1. आचार्य भरतमुनि रचित नाट्यशास्त्र के अनुसार भाव एवं रस का अध्ययन। 2. नायक भेदों का विस्तारपूर्वक अध्ययन।	
Unit- V^{th}	1. कथक नृत्य में गुरू वंदना एवं भूमि प्रणाम का महत्व। 2. तीन ताल, झपताल एवं सूलताल के ठेकों की ठाह, दुगुन, तिगुन एवं चौगुन लिपिबद्ध करना एवं इनमें सीखे गये बोलों को लिपिबद्ध करने की क्षमता।	

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

स्नातक कक्षाओं के लिये वार्षिक पद्धति अनुसार पाठ्यक्रम(स्वाध्यायी)

Choice Based Credit System- (CBCS)

सत्र 2021–22

Class : BPA III$_{rd}$ Year
Subject : Kathak Dance
Paper : 2nd
Title of paper : निबंध संरचना, लयकारी एवं प्रयोगात्मक सिंद्धात
(Essay composition rhythmic pattern and principal of practical)
Compulsory/Optical : Compulsory
Max. Marks : 100

Particulars/विवरण

Unit- 1$_{st}$	1. मध्यकाल से वर्तमान काल तक कथक नृत्य के विकास का अध्ययन कीजिए। 2. भारतीय एवं पाश्चात्य नृत्य के संबंध पर प्रकाश डालिए।	
Unit- IInd	1. कथक नृत्य के घरानों की विशेषताऐं एवं परम्परा का विशिष्ट अध्ययन। 2. जीवनी एवं कथक नृत्य में योगदानः– पं. जयलाल महाराज, पं. नारायण प्रसाद, पं. सुंदर प्रसाद, पं. कुंदनलाल गंगानी, पं. राजेन्द्र गंगानी, पं. तीरथराम आजाद	
Unit- IIIrd	1. अभिनय दर्पण के अनुसार संयुक्त हस्ता मुद्राओं का विनियोग सहित वर्णन कीजिए। 2. आचार्य नन्दिकेश्वर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' के अनुसार चारी तथा भ्रमरी भेदों का अध्ययन।	
Unit- IVth	1. आंगिक अभिनय के साधन क्या है ? 2. कथक नृत्य में भाव पक्ष का महत्व।	
Unit- Vth	1. आधुनिक समाज में नृत्य का स्थान। 2. कथक नृत्य में परम्परा एवं प्रयोग।	

नोटः– प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम के ताल –झपतालएवं सूलताल
पूर्व पाठ्यक्रम के ताल–तीन ताल, कहरवा, दादरा एक ताल, चौताल की पुर्नरावृत्ति।

संदर्भित पुस्तकें:–

1. भारतीय संस्कृति में कथक परपंरा (डॉ. मांडवी सिंह)
2. कथक दर्पण (स्व. श्री तीरथराम आजाद)
3. रायगढ़ में कथक (श्री कार्तिकराम जी)
4. कथक नृत्य शिक्षा भाग एक एवं दो (डॉ. पुरू दाधीच)
5. कथक कल्पद्रुम (डॉ. चेतना ज़्योतिषी व्यौहार)
6. संगीत दर्पण (श्री दामोदर पंडित)
7. अभिनय दर्पण (श्री वाचस्पति गैरोला)
8. नटवरी नृत्यमाला (गुरू विक्रम)

9. कथक नृत्य (श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग)
10. कथक नर्तन (डॉ. विधि नागर)
11. कथक मध्यमा (डॉ. भगवानदास माणिक)
12. कथक नृत्य शिक्षा भाग–1 (डॉ. पुरू दाधीच)
13. कथक नृत्य का मंदिरों से संबंध ''जयपुरघराने के विशेष संदर्भ में''(डॉ. अंजना झा)

प्रायोगिक– प्रदर्शन एवं मौखिक **पूर्णांकः 100**

Unit- 1st	1. तीन ताल में तिगुन व विभिन्न जाति के बोल, बन्दिशें तथा तिहाइयाँ करने का अभ्यास तत्कार के अंतर्गत लड़ी व चलन करने का अभ्यास।	
Unit- IInd	1. गत निकास–बिंदिया व छूट (ठाठ) 2. गतभाव–माखनलीला।	
Unit- IIIrd	1. सरस्वती वंदना पर भाव प्रदर्शन। 2. नाट्यशास्त्रानुसार भृकुटी भेदों का प्रायोगिक प्रदर्शन।	
Unit- IVth	1. झपताल एवं सूलताल में निम्नानुसार नृत्यः– पद संचालन, ठाठ, एकआमद, तीन तोड़े, एक परन, एक चक्करदार परन, एक तोडा, एक कवित्त दो तिहाई एवं तत्कार – ठाह दुगुन, तिगुन, चौगुन	
Unit- Vth	पढन्त करने की क्षमताः– 1. झपताल एवं सूलताल की ठाह, दुगुन तिगुन एवं चौगुन। 2. प्रायोगिक में सीखी गयी सभी बन्दिशों का नृत्य प्रदर्शन	

नोटः–तृतीयवर्ष के पाठ्यक्रम के ताल–झपताल एवं सूलताल

पूर्व में सीखे गए पाठ्यक्रम की पुर्नरावृत्ति